4-12-67 ओम शान्ति रात्री क्लास

जब भी किसको समझाते है तो यह समझाना है कि भक्ति मार्ग दुब्बण है। कितना हंगामा है। ज्ञान में तो चुप रहना है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। कर्म करते भी अपने को आत्मा समझ और अपने धाम को याद करना है। अन्त में और कोई भी याद ना रहे। समझाने वाले बड़े अच्छे चाहिये। समझाने वाले कच्चे होगे तो वो भी प्रजा बनेगी पक्के होगे तो वो भी प्रजा बनेगी। अनुभव सब बच्चों ने सुनाया। कहेगे कि यहाँ तक दुब्बण मे थे। बाकी चोटी जा कर रही थी। अभी तुमको तो ब्रहमण बन सब को दुब्बण से निकालना है। धीरे धीरे करते डूबे है। निकाल तो झट सकते है। डूबनें में आधा कल्प और निकलने में एक जन्म लगता है। बच्चे समझते है कि कितना सहज निकलना होता है। डूबने में टाईम लगता है। निकलने में एक सेकन्ड। समर्थ है ना। डरना वा मूंझना ना है। बहुत सहनशील चाहिये। बाबा बहुतों को देखते है मूड बहुत जल्दी बिगड़ जाता है। मूड़ बिगड़नें वाले कभी सुधरते नही हैं। थोड़ी थोड़ी बात पर फंक हो जाते है। फिर तो सुधारना भी मुश्किल हो जाता है। फिर पद भी कम हो जाता है। नही तो बच्चों को अथाह खुशी होनी चाहिये। समझते है कि बाप के बने है। वोही बाप टीचर गुरु और टीचर है। तीनों की मदद से हमको पार जाना है। तीनों की शक्ति एक में ही आ जाती है। तुम जानते हो कि बेहद की राजधानी स्थापन हो रही है। फिर पद के पुरुषार्थ करना है। यहाँ से ट्रांसफर होते है। इसकी खुशी बहुत होनी चाहिये। बाबा भी रोज कहते है कि बच्चों तुम पदम भाग्यशाली बनते हो। तुम्हारी कमाई बहुत ऊंची है। ऊंच ते ऊंच भगवान ऊंच ते ऊंचे शिव बाबा सौदागर। इसलिये प्रदर्शनी में भी पहले पहले यह बताओ कि बाबा कहते है कि मुझे याद करो। जिससे पवित्र बन वर्सा पा लेगे। इतनी सहज बात भी पता नही कि क्यों नही समझते है। नहो तो समझान बहुत सहज है। बेहद का बाबा बेहद का वर्सा देगे। ब्रह्माण्ड भी बाप ही है ना। समझाने समय चेहरे में खुशी होनी चाहिये। अच्छा

5-12-67 रात्री क्लास

****************** बाप जो ज्ञान सुनाते है। बाप अच्छी रीत जानते है। ब्रहमण बच्चे यह भी जानते है पवित्र भले रहते है परन्तु ज्ञान का नशा नही। जो मिला सो अच्छा। यह तो कल्प कल्प की बाजी है। बच्चों को खुशी भी रहती है कि कलकत्ते में भी अच्छे अच्छे बच्चे है अच्छे ही मदद गार रहती है। बच्चे हुलास में रहते है तो अपने को मददगार जाने तो हम क्या करते है। जिनको करते है वो जानें कि कौन क्या मदद करते है? सब को मलूम नही पड़ सकता। देनें वाले भी खुश होते है कि हम देते नही है किन्तु लेते है। सर्विस में बिजी रहने से खुशी रहती है। बाबा को समाचार तो देते है ना। जहाँ कम सर्विस इतना लाभ नही निकलता तो समझाया जाता है कि ऐसे ऐसे करो। छोटी दुकान नही है। पहले छोटी दुकान फिर बड़ी बनती है। सेल्समैन का समाचार जाता है कौन अच्छी बिक्री करते है। पहले पहले जो दुकान में चढ़ते है तो पहले हल्का काम सफाई आद करने का जोर देते है। जो अच्छी बिक्री करते है, धन्धा चलाते होगे, इनका समाचार सेठ पास आवेगा। यहाँ भी ऐसे है कि करने वालो का नाम होता है। स्टूडेन्ट फिर भेजर, भागीदार सेठ बनेगें। यह अविनाशी ज्ञान रत्नों का व्यापार है। इसमें जितनी कमाई है और इतनी किस में भी नही है। तुम जानते हो कि जो अच्छी सर्विस करते है उनकी कमाई भी वैसे ही अच्छी होती है। सर्विस करने वाले को बाप भी प्यार करते है। जो कुछ भी नही करते है उनका नाम भी दिल पर नही रहता है। नाम बाला करना चाहिये। बच्चों को। हैन्डस की डिमांड बहुत है। सर्विस करने वाले कम है। दिल पसंद नही है। इस लिये अब क्लास भी कोचिंग लिये निकलती है। सो भी बहुत सम्भाल रखनी पड़ती है। आज की दुनियो में गुंडों की बाजी कितनी है। ऐसे बच्चों की सम्भाल बहुत चाहिये। खुशी में रहना चाहिये। यह तो सब समझते है कि हम नई दुनियो में जाते है। दुनियो बदलती है बच्चो को ही मालूम पड़ता है। दुनियां तो बदलती है परन्तु हम क्या पद पावेगे। इसके लिये कोशिश की जाती है। हम अच्छा पुरुषार्थ करते है तो कल्प कल्प अच्छा पद मिलेगा' समझते है कि नई दुनियों में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार पद मिलता है। पुरुषार्थ ना होने से पद कम। समझ में आता है कि सतयुग में रावण है नही। इसलिये वहां सुख है। परन्तु नम्बरवार मर्तबे की फीलिंग र

तो आवेगी ना। पद गिर राजधानी नही चलती है। ऊंच मर्तबे से ही खुशी होती है। आमदनी भी अच्छी होती है। होशियारी बहुत अच्छी है हर बात में। फीलिंग तो रहती है ना। सुख की भी अच्छी फीलिंग आवेगी। दुख की भी फीलिंग आती है। बाप तो कहेगे कि पुरुषार्थ करो। ऊंच पद पाओ तो खुशी की भी फीलिंग रहेगी। बाकी यह ड्रामा जो पहले से ही बना हुआ है। बाप कहते है कि तुमको ज्ञान का तीसरा नेत्र दिया है याद करने के लिये। अपनी जांच करो कि बुधि का योग बाप के साथ है। बाप का नाम-रूप, देश, काल भी समझाया है। तुमको तीसरा नेत्र मिला है। यहां तुम जैसे देखते नहीं हो। अशरीरी हो वापिस जाना है। भल बाबा की तरफ देखो परन्तु याद करना है बाप को। बाप भी तुम बच्चो को ही देखते है। बाप की याद को भुलना ना है। बाप ऊंच पद पाने लिये समझाते है। ऐसे ना हो कि बुधि बैठे बैठे कहीं और चली जाये। बाप समझ सकते है कि ऐसे होते है बाहर का सब याद रहता है। बाप ने समझाया है कि अपने को आत्मा समझो। उस डायरेक्शन पर कम चलते है। चलने से फायदा भी होगा। डायरी रखना बहुत जरूरी है। देखना है कि यज्ञ की सर्विस कितनी की। तो आपे ही लज्जा आवेगी कि हमने तो दो घन्टा भी सर्विस नही की। यह भी तो गवर्मेन्ट है ना। उस गवर्मेन्ट को 8 घन्टा सर्विस करते है। यहां हम कितनी सर्विस करते है लिखने से दिखा सकते है। बाबा भी आफरीन देगे। सर्विस नही करते तो मुफ्त में कर्जा चढ़ाते है। पद कम हो जाता है। फिर वो कर्जा देना पड़ता है। यज्ञ में सर्विस ना की तो दासी बननां पड़ेगा। चार्ट रखना हर हालत में अच्छा होता है। तो दिल खावेगी कि हम कितना वेस्ट टाईम करते है। बाप तो युक्तियां बताते है। टाईम वेस्ट ना करो। बाप भी रात दिन ख्यालात चलाते रहते है। बड़े बड़े सेन्टर खोलो। छोटे नही। हिम्मते बच्चों की मदद बाप की। यह है राजस्व मेध यज्ञ। सर्विस का शौक तो सब को होता है। जो बहुत सर्विस करेगे उनका ही नाम होगा। बाप समझाते है कि स्टूडेन्ट तो हो ही। रजिस्टर रखने से तुमको अपना मालूम पड़ जावेगा। हम कितना वेस्ट टाईम करते है। डायरी में नोट करने से बहुत पता पड़ेगा। अपनी उन्नति करनी चाहिये। डायरी डाले कोई। क्योंकि यह तो यज्ञ है ना। बहुत बच्चे है जो पूरा समझते नही है। बाप तो चाहेगे ना कि यह बच्ची ऊंच पद पावे। टीचर तो कहेगे ना कि बहुत पास हो। यह तो ड्रामा में पहले से ही नूंध है। अपने चार्ट से पता पड़ेगा कि हम सारा दिन क्या करते है? यह ख्याल में आना चाहिये कि हमने शुरू में किया है। वो तो भविष्य का हो गया। अभी क्या करते हो, दीया सो खाते रहते हो ना फिर तो वो सब खत्म हो जावेगा। हिसाब भी है। ऐसे ना समझे कि बाबा ने बताया नही है। इसलिये बच्चों को चार्ट रखना बहुत जरूरी है। जांच करनी है। अच्छा

कुछ रही हुई पुआईन्टस—

बाप तुम बच्चों को वेद सुनाते है पहले पहले तो नजदीक में यह सुनते है। सुनाते तुम को है। यह सुनते है। बाबा डाईरेक्ट हमको कैसे सुनावेगे। तुमको सुनावेगे तो हम भी सुनेगे। हम अकेले को कैसे सुनावेगे। दूसरे को सुनावे तो तब तो हम भी सुने ना। बच्चे जानते है दिन प्रति दिन भक्ति वृधि को पाती रहती है। तो सतोप्रधान से सतो रजो तमो में गिरते आते है। अव्यभिचारी भक्ति से व्यभिचारी भक्ति हो जाती है। अभी तुम एक बाप से ही सुनते हो यह है अव्यभिचारी। बाप आत्माओं को समझाते है। आत्मा आर्गन्स दवारा सुनती है। आत्मा ही एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। 84 जन्मो का हिसाब भी तुमको ही समझाया है। जो अच्छे पुरुषार्थी होगे वो ही पहले आवेगे। सारा मदार ही पुरुषार्थ पर है। पुरुषार्थ करके अच्छा जादुगर बनेगे। नर से नारायण नारी से श्री लक्ष्मी। लौकिक बाप से भी वर्सा मिलता है। पारलौकिक बाप से भी वर्सा मिलता है। बाकी आलौकिक से नही। इनके दवारा पारलौकिक से वर्सा मिलता है। यह भी पुरुषार्थ है ना।